Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 | Impact Factor - 7.139 | Indexed (SJIF)

05 Sept. 2021 Special Issue- 43 Vol. 1

Literature, Culture and Media

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Guest Editor
Principal Dr. Kishan Pawar

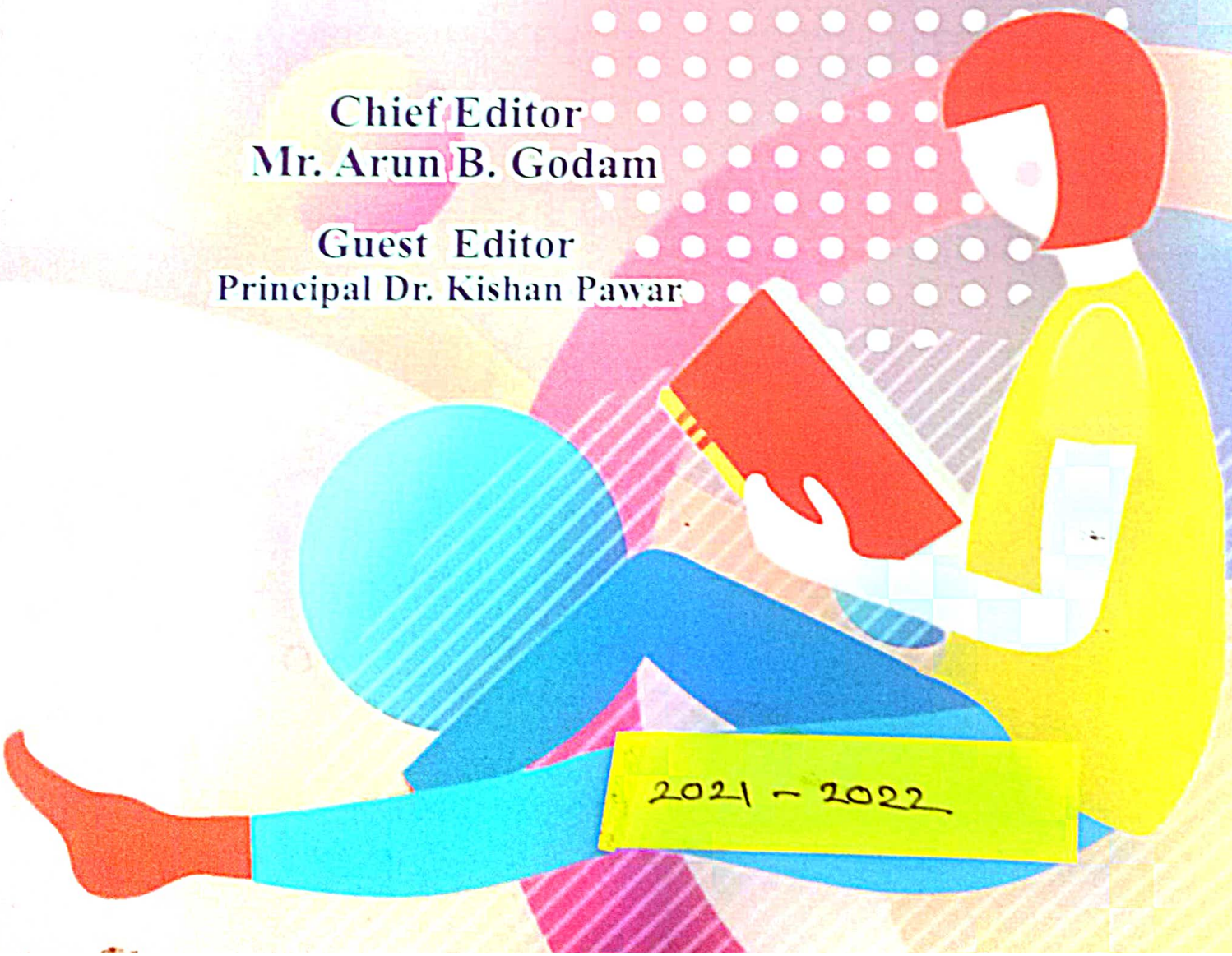

साहित्य, संस्कृति और मीडिया के उपलक्ष्य में प्रस्तुत शोधालेख "आधुनिक साहित्य में चित्रित मनोवैज्ञानिकता" 50
प्रा.डॉ.संजय व्यंकटराव जोशी

15. 'अर्धनारीश्वर' में भारतीय तथा पाश्चात्य संस्कृति का समन्वय 52
प्रा.डॉ. काकासाहेब गंगणे, , प्रा.डॉ. गजानन सवने

16. श्री तेजपाल धामा के कथात्मक साहित्य में भारतीय संस्कृति 54
सुश्री . स्वाति हिराजी देडे , डॉ.विनोदकुमार विलासराव वायचळ

17. साहित्य और संस्कृति 56
प्रा.डॉ. वडचकर शिवाजी

18. वाचन संस्कृती आणि माध्यमे 58
प्रा.अशोक शि.खेत्री

19. वाचनसंस्कृती 60
प्रा.ज्ञानेश्वर को. गवते

20. ऑनलाइन शिक्षण आणि आपण 62
सह.प्रा.उघडे सुहास मुरलीधर

21. साहित्य, संस्कृति व प्रसार माध्यमे 65
डॉ. लक्ष्मण बळीराम थिट्टे

22. वाचन संस्कृतीवर समाजमाध्यमांचा पडलेला प्रभाव 67
प्रा. डॉ. रमेश औताडे

23. वाचनसंस्कृती आणि प्रसारमाध्यमे 70
सहा. प्रा.डा. रवींद्र बाबासाहेब ढास

24. अध्ययन-अध्यापनात माध्यमांची भूमिका 74
डॉ. सीता ल.कंद्रे

25. साहित्य आणि प्रसार माध्यमे 77
प्रा.डॉ.लक्ष्मण गित्ते

26. अध्ययन- अध्यापनात माध्यमाची भूमिका 79
प्रा.डॉ. रामहारी मायकर

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue 43, Vol. 1 Sept. 2021	Peer Reviewed SJIF	ISSN : 2319 - 8648 Impact Factor : 7.139

साहित्य और संस्कृति

प्रा.डॉ. वडचकर शिवाजी
कै. रमेश वरपुडकर महाविद्यालय, सोनपेठ, जि. परभणी, महाराष्ट्र

Late Ramesh Warpudkar ACS College Sonpeth Dist. Parbhani

प्रस्तावना :

साहित्य किसी भी समाज का लेखा - जोखा होता है। किसी भी राष्ट्र का साहित्य उसकी सभ्यता की पूरी जानकारी धारण किये हुए होता है। किसी भी काल के साहित्य से उस समय की सामाजिक परिस्थितीयों, राजनीतिक वातावरण, रहन-सहन,खान-पान व अन्य गतिविधियों का पता चलता है। ' साहित्य ' का शाब्दिक अर्थ ' सहित ' अथवा समावेश की भावना से समझा जाता है। साहित्य की सर्जना के मूल में लोक मंगल की भावना ही विद्यमान है, साहित्य का उद्देश मात्र मनोरंजन नहीं बल्कि समाज यदि भटक रहा है तो उसका समुचित मार्ग दर्शन करना भी है। ' आदि कवि वाल्मीकि ' ने एक बहेलिये द्वारा निरीह कौंच पक्षी की हत्या कर देने के बाद उस बहेलियों से जो कहा, उनकी पीड़ा के वही शब्द बाद में ' रामायण ' जैसे महानतम महाकाव्य की रचना का आधार बने। समाज के लिये पीड़ा व समाज के कल्याण की दिशा में सोचना साहित्य का प्राथमिक उद्देश्य है। राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त के शब्दों में

" केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिये।
इसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिये ॥ "

संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है : जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला आदि में परिलक्षित होती है। स्पष्ट है कि संस्कृति के एक पक्ष के अंतर्गत साहित्य को सम्मिलित किया जाता है। साहित्यकार द्वारा लेखन कार्य में संस्कृति के मूल्यों, आचार-विचारों, प्रथाओं, मान्यताओं, अभिवृति इत्यादि को स्थान दिया जाता है। इस प्रकार साहित्य और संस्कृति में ' बहु आयामी संबंध ' पाया जाता है।

भारतीय संस्कृति की प्राचीनता के साथ ही भारतीय साहित्य भी प्राचीन है। वेद, उपनिषद, अरण्यक इत्यादि प्राचीन साहित्यिक स्त्रोत है। भारतीय संस्कृति की आधारभूत विशेषताओं - "वसुधेव कुटुम्बकम, साहिष्णुता, विविधता में एकता, समन्वय शीलता इत्यादि को हमारे साहित्य में समुचित अभिव्यक्ति दी गई है। जब कभी भी संस्कृति संक्रमण के दौर से गुजरती है अथवा समाज में मूल्यों का ऱ्हास होता है तब साहित्यकार द्वारा संस्कृति को इन संक्रमण कालीन परिस्थितीयों से निकालने एवं समाज में मूल्यों को बनाए रखने का प्रयास किया जाता है।

वस्तुतः भारतीय संस्कृति में ' अध्यात्म और भौतिकवाद ' का समन्वय नजर आता है। यहाँ ' अध्यात्म ' को अधिक महत्व देने के कारण धर्म एवं दर्शन की समृध्द परंपरा नजर आती है। भारतीय संस्कृति की इसी परंपरा को रेखांकित करते हुए ' कबीरदास ' कहते है।

" साई इतना दीजिए, जा में कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु ना भुखा जाए ॥ "

हमारी भारतीय संस्कृति के अन्य संदर्भो की चर्चा करे तो हमें ज्ञात होता है कि प्रेम एवं सहिष्णुता, प्रकृति, मानव सह अस्तित्व, उदारता, समन्वयवादी दृष्टिकोण भारतीय संस्कृति के ' बागान के फूल है ' जो भारतीय संस्कृति को ' इंद्रधनुषीय ' या ' समेकित संस्कृति ' का रूप प्रदान करते है और यही विविधतावादी दृष्टिकोण साहित्य में भी नजर आता है। गुजराती का फाग, मलयालम का मणि प्रवालम, उर्दू का गज़ल साहित्य, तमिल का संगम साहित्य, हिन्दी का भक्ति साहित्य भारतीय उद्यान के अनमोल फूल हैं। इस साहित्य ने जिस आदर्श को प्रतिष्ठित किया है, वह सांस्कृतिक एकता व मानवीय समता को प्रतिष्ठित किया है, वह सांस्कृतिक एकता व मानवीय समता को स्थापित करनेवाली, संसार को अपने भावात्मक विस्तार में समेट लेने की विश्वव्यापी सामाजिक चेतना से युक्त रहा है। अमीर खूसरो, रसखान, जायसी, रहीम, वली हो अथवा गुजरात के नरसी मेहता, महाराष्ट्र के एकनाथ - तुकाराम, नामदेव, नाथ, सिध्द हो या कबीर हो, सूर हो या रामभक्त तुलसी सभी हमारी संस्कृति मान्य है, पूज्य है।

साहित्य मानव जीवन का दर्पण है। साहित्य मानव जीवन को प्रतिबिंबित करने के साथ उसे प्रभावित करने का भी कार्य करता है। साहित्य को जब हम मानवीय जीवन का दर्पण मानते है तब उसमे मानव का सभी प्रकार का दर्शन अवश्य हो जाता है। साहित्य में सत्य की साधना है, शिवम की कामना है और सौंदर्य की अभिव्यंजना है। शुध्द, जीवंत एवं उत्कृष्ट साहित्य मानव संवेदना और उसकी सहज वृत्तियों को युगों तक जन-जन के मानस में रससिक्त करता रहता है। साहित्य समाज की धडकन है तथा इसमें मानवीय सुख दुःख आशा निराशा, साहस - भय और उत्थान - पतन का स्पष्टरूपेण चित्रण रहता है। यद्यपि साहित्य में अनुभूति व्यक्तिगत होती है, परंतु अभिव्यक्ति का संप्रेषण समष्टिगत संवेदनशीलता को छू लेता है। इसलिए साहित्य की मूल संवेदना प्रायः अपने देश की संस्कृति की ओर झुकती है। अपने देश में संस्कृति की कई अवधारणा है। कोई धर्म को संस्कृति का आधार मानता है, कोई कला, साहित्य और भाषा को, ग्रामीण दलित और जनजातियों की एक अलग ही लोक संस्कृति मानी जाती है। दरअसल संस्कृति का क्षेत्र बहुत व्यापक है। जैसे ही साहित्य का क्षेत्र भी व्यापक है। हमारे पूर्वजों ने जो कहां है वही सत्य महसूस होता है। ' जो न देखे रवी वह देखे कवि ' आज इसी संदर्भ में कालिदास केवल भारत की ही थाती नही, वरन् संपूर्ण विश्व की अक्षय निधि बन चुके है। हमारा विश्व राजनैतिक दृष्टि से अलग - अलग गुटों में क्यों न बँटा हुआ हो किंतु साहित्य के प्रांगण में सब एक है, क्योंकि दुनिया का मानव एक है तथा उसकी वृत्तियाँ भी सब जगह और कालो में एक समान है।

मैं यहाँ साहित्य और संस्कृति के अतंर्सबंधों पर कुछ विचार प्रस्तुत करने जा रहा हूँ। यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि इस देश के अधिकांश लोग पढे .-लिखे है वे साहित्य के साथ संस्कृति को जोड़कर अध्ययन करते है। संस्कृति हर समाज के हर क्षेत्र के व्यक्तियों के

जीवन में वह हर जगह व्याप्त है | और साहित्य व्यक्ति या मानव निर्मित है | साहित्य में मनुष्य की व्यथा - वेदना, आशा - आकांक्षा, विरह-मिलन और संघर्ष - सहयोग नाना रूपों में भले ही अभिव्यक्त होते हों, पर उनका मर्म एक ही है | अनेक ऐतिहासिक और भौगोलिक कारणों से स्थितियों और दृष्टिकोण भिन्न - भिन्न हो सकते है और होते भी है, लेकिन लक्ष्य सभी का ' मनुष्य ' ही है | किसी एक का साहित्य - सृजन किसी दूसरे सहृदय को भी सरसता प्रदान करता है | यही प्रदत्त सरसता साहित्य की उत्कृष्टता एवं सफलता है | साहित्य के माध्यम से हमारे देश की संस्कृति को पहचाना जा सकता है पुराने समय में हमारे देश में किस तरह की संस्कृति थी यहां के लोग किस तरह से रहते थे, किस तरह से लोकनृत्य आदि करते थे यह सब हम साहित्य के माध्यम से जान सकते है | और अपने देश की संस्कृति को अपनाकर इस देश को महान देश का दर्जा दिला सकते है

आज साहित्य और संस्कृति हमारे जीवन के दो सुंदर पहलू है जिनको हम सभी को अपने जीवन में अपनाना चाहिए | साहित्य और संस्कृति का हमारे देश में बड़ा ही महत्व है | सभी संस्कृति में बंधे हुए है और साहित्य हमारे जीवन में रंग भरता है | बहुत कुछ अच्छा देखने को मिलता है | साहित्य मानव की जिंदगी को दर्शाता है साथ ही हमारी संस्कृति को दर्शाता है, साहित्य हमको अच्छा, बुरा, पाप, पुण्य आदि समझाता है |

साहित्य एक स्वायत्त आत्मा है और उसकी सृष्टि करनेवाला भी ठीक से यह नहीं बता सकता की उसके रचे साहित्य की गूँज कब और कहाँ तक जाएगी तथा उसमें जागनेवाला सत्य कितने और कैसे आस्वादों की रचना करेगा यहाँ संकेत यह है कि साहित्य समाज में नैतिक सत्य की चिंता है तो यह समाज की दुरगामी वृत्तियों का रक्षक है | तभी तो प्रेमचंद ने साहित्यकारों को सावधान करते हुए साहित्य के लक्ष्य को बड़ी मार्मिकता से रेखांकित करते हुए कहा था - " जिस साहित्य में हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हमें शक्ति और गति न पैदा हो, हमारा सौंदर्य - प्रेम न जागृत हो, जो हम में सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं है" साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से देश की संस्कृति बताने और समझाने की कोशीश की है आज हम सभी को समझना ही हमारे जीवन में उस संस्कृति का जो उमंग है उसको वापस ला सके | हम सभी जानते है कि हमारे देश की जो संस्कृति है वह हम भारतवासियों की आत्मा है | जब हम किसी साहित्य को पढ़ते है तो उसके माध्यम से हमको पता चलता है कि हमारे पुराने समय के जो व्यक्ति थे, वे किस तरह से अपना जीवन यापन करते थे | देश की संस्कृति ने ही हम सभी को एक दूसरे से बांधकर रखा हुआ है जब हम सभी मिलकर राष्ट्रीय त्योहार मनाते है तब हमें हमारी संस्कृति की जानकारी होती है कि हमारी संस्कृति कितनी अच्छी थी |

साहित्य समाज को सुंदर बनाने का काम करता है | साहित्यकारों के माध्यम से हम सभी को हमारे पुराने ग्रंथों और पुरानी सभ्यताओं के बारे में पूरी जानकारी मिलती है | समाज में कई धर्म के लोग रहते है जैसे कि हिंदु, सिख, ईसाई, पंजाबी और देश में अलग - अलग भाषाएं भी है लेकिन देश के कई ऐसे राष्ट्रीय त्यौहार हैं जिनको हम सभी धर्म और अलग - अलग भाषाओं के लोग आपस में मिलकर एकता से मनाते है | साहित्य के माध्यम से हमें ग्रंथों के बारे में पढ़ने का मौका मिलता है और मिल रहा है उसके जरिए हमें हमारे द्वारा समाज को सही रास्ते पर चलाकर हमारे समाज और देश का विकास करने का मार्ग मिलता है | समाज को मजबूत बनाने में साहित्य का सबसे बड़ा योगदान है क्योंकि जब समाज में गलत कार्य होने लगते हैं तो साहित्य ही हम को सही रास्ता दिखाते है | साहित्य के माध्यम से कई ऐसे महान पुरूषों के बारे में हम को पढ़ने मिलता है जिन्होने इस समाज को मजबूत करने के लिए अपना पूरा जीवन लगा दिया और यह उन्होनें सिर्फ समाज के लिए किया | समाज ही लोगों को संस्कृति के बंधन में बांधता है और हम उस बंधन में बंधकर अच्छे अच्छे कार्य करते है | जब साहित्यकार के द्वारा किसी महापुरूषों के बारे में लिखा हुआ साहित्य हम पढ़ते है तो हमे गर्व होता है कि हम भी उसी देश में जन्में है जिस देश में ऐसे महापुरूषों ने जन्म लिया है | हमारे देश को मजबूत करने में संस्कृति और साहित्यकारों की बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है |

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

Current Global Reviewer

Indexed (SJIF)

ISSN 2319-8648

Impact Factor- 7.139

Chief Editor
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999

SHAURYA PUBLICATION
Latur
Publisher
Shaurya Publication

woixel

Peer reviewed Journal Impact Factor:7.265 ISSN-2230-9578

Journal of Research and Development

Multidisciplinary International Level Referred Journal

April-2022 Volume-13 Issue-21

Chief Editor

Dr. R. V. Bhole

'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Editor

Dr. M.N. Kolpuke
Principal,
Maharashtra Mahavidyalaya, Nilanga, Dist. Latur

Dr. V.D. Satpute
Principal,
Late Ramesh Warpudkar College, Sonpeth, Dist. Parbhani

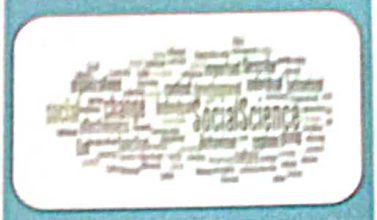

2021-22

Address

ichandram' Survey No-101/1, Plot,No-23,Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

38	दळण वळण नवीन सुधारणा एक विचार प्रवाह श्रीकांत गव्हाणे	141
39	महिला उद्यमिता डॉ सुरेखा पिपलानी	144-
40	आंबेडकरोत्तर काळातील आंबेडकरवादी चळवळी प्रा.डॉ. बी.एम. काळे	147-1
41	मोगलकालीन कृषी व्यवसायाचा ऐतिहासिक दृष्टीकोण पवार डी. व्ही.	152-154
42	भारतातील कौशल्य विकास व योजनांचा चिकित्सक अभ्यास प्रा.पांचाळ विजय किशनराव	155-157
43	स्त्री आणि पुरूषांमधील सामाजिक योगदान आणि भावनिक कार्यकुशलता या घटकांचा तुलनात्मक अभ्यास. शितल भागवत जाधव प्रा.डॉ.रमेश पठारे	158-162
44	उद्योजक आणि महिला उद्योजकांची वाटचाल डॉ. कु. धुतमल वर्षा सिताराम	163-165
45	आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी प्रा. डॉ. वडवकर एस.ए.	166-168
46	बँकींग क्षेत्रातील सुधारणा प्रो.डॉ.एम.डी.कच्छवे	169-173
47	नागरी सहकारी बँकांचा पूर्व इतिहास आणि सद्यस्थिती प्रा. डॉ.अरूण बळीराम धालगडे सय्यद फारुखअली जहूरअली	174-176

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

'Journal of Research & Development' A Multidisciplinary International Level Referred and Peer Reviewed Journal,
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, 20 April 2022, Volume-13, Issue-21

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

आधुनिक हिन्दी साहित्य में नारी

प्रा. डॉ. वडयकर एस.ए.
हिन्दी विभाग, कै. रमेश वडपुडकर महा. सोनपेठ
जिला परभणी महाराष्ट्र ४३१५१६
Email-sayaliswapnilwsa@gmail.com

भुमिका :- भारतीय जीवन में शुरुवात से अभीतक स्त्री के प्रति सच्चा लेखा-जोखा उपन्यास, कहानी या कविता में मिलता है । हजारों साल पहले जब हमने लिपि का अविष्कार भी नहीं दिया था तब जो रचा जाता वह मौखिक हुआ करता था । उस वक्त भी हम मौखिक को दूसरों तक पहुँचा देते थे । यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी चलती आ रही है । उन दिनों नारी - पुरुष का शारिरिक भेद तो मानते थे, किन्तु कोई किसी प्रकार का अंतर नही समाज में नारी-पुरुष का समान भाव ही हमेंस सदियों से स्वस्थ समाज बने रहने में सहायक मानते रहे है । किन्तु हमारे उपर जो माइग्रेसन का जो असर हुआ । समाज का ऐक्य का भाव सपना बन गया । परंपरा से चले आरहे मुल्य क्रमषः बिखरते गए । वह विघटन हमारे समाज को दुर्बल बनाता रहा । ऐसे कई उतार - चढाव इतिहास में आते गये । इसका परिणाम हमारी पारंपारिक समाज व्यवस्था में भी निरंतर होता रहा । कुछ मुल्य बिखरे, टूटे, तो कुछ मुल्यों में बदलाव आया तो कुछ स्थायी बन गये जिस की चमक आज भी है । नारी के प्रति भी यही दृष्टि लगी रही । इसमे जादा प्रभाव विदेषी आक्रमणों और पर्यटकों का रहा । शासन द्वारा जो जबरन हमेषा परिवर्तन कराया । उसमे स्वदेषी, पदेषी परतंत्र में सब से ज्यादा तनाव नारी ने भोगा है । समय - समय के अनुरुप नारी चिंतन भिन्न-भिन्न रुप से हमारे सामने आता है । इसमें सबसे बडा हाथ नारी के प्रति दृष्टिकोण का रहा है । भारतीय दृष्टि में नारी एक 'मुल्य' है । पर पाष्चात्य जगत में नारी एक 'वस्तु' है ।

पुरुष समाज में पुरुष के बनाये नियमों के, उसके वर्चस्वके, स्त्री की अपनी निरीहता के विवषता के विवषता के, कि वह अपने को उस जकड़न से, उन रुढियों से, विपरीताओं से निकलने की कोषिष नही करती । अर्थात स्त्री स्वभाव को समझाने के लिए यह विचार विमर्ष महत्वपुर्ण है । नारी विमर्ष में अनेकों रिष्तें है - केवल पति-पत्नी ही नही । परिवार के अन्य रिष्ते भी है । समाज में स्त्री देसी व्यक्ति है जिसके तार समाज के हर वर्ग से जुडे है । फिर वह प्रेम रस है, शोषण है । पीड़ा है, अस्मिता है, संघर्ष है, यह सब नारी विमर्ष के अंग बनते है । उसकी इच्छा के विरुध्द एक दृष्टि भी वह नही सह पाती । मतलब नारी विमर्ष बहस का मुद्दा उतना नहीं जितना जागृति का हे । यहाँ आधुनिकता संतुलित है ।

प्राचीन भारत में नारी को लगभग समान स्थान दिया गया है । क्योंकि उसके बिना कोई राजकार्य, धर्मकार्य, दान-दक्षिणा दि संभव ही नही था । परंतु आधुनिक युग में परिवर्तन हुआ है ।

हिंन्दी कथा साहित्य में नारी

सामाजिक और राजनैतिक स्तरपर नारी अस्मिता की स्थापना और गरिमा के लिए काफी प्रयास हुए । नारी के सुखद भविष्य को लेकर जब हम विचार करते है, तब लगता है की उसे न्याय और स्वतंत्रता देना अनिवार्य है । परम्परागत बंधनों को तोड़ना आवष्यक है । उसमे कुछ बाते इस प्रकार है - स्त्री - पुरुष समानता, षिक्षा, विवाह, नौकरी प्रत्येक क्षेत्र में दोनों लिंगो को समान अधिकार हो । आजादी के बाद संविधान में समान अधिकार दिया गया । जनतंत्र में वोट का समान अधिकार भी मिला किन्तु व्यावहारिक रुप में बहुत कुछ घुट गया । शोषण चला, दहेज, उत्पीडन, वेतन का तारतम्य जैसी घटनाएँ । इसमे नारी उठ खड़ी हुई । रामायण - महाभारत में नारी के साथ जो हुआ वह अकल्पनीय है । विलास की साधन बनी थी । तो हिन्दी साहित्य के बीरगाथा काल में वह इज्जत और प्रतिष्ठा का प्रतीक बनी । उसपर बंदि से लगाई गई । सती, बहु-विवाह, अंध-विष्वास जैसी कुरीतियाँ नारी जीवन को संकट में ले गयी । सती प्रथा का खंडन राजा मोहन राय ने किया । उसे भक्तिकाल में भी अवलेहना ही झेलनी पड़ी । उसको द्वित्तीय दर्जे का इंसान कहां । रीतिकाल तक आते-आते नारी मांसलता प्रमुख हो गई । भोग्यता रुप ही जादा चित्रित हुआ । दरबारी और सांमती युग में नारी की महिला उसके सौन्दर्य, उसकी मांसलता अथवा कला रुप पर निर्भर करने लगी । किन्तु आगे चलकर आधुनिक युग में बदलाव हुआ । सती प्रथा का अंत, विधवा - विवाह, बाल विवाह पर प्रतिबंध, षिक्षा का प्रचलन आदि सुधार चले । हिन्दी साहित्य में भारतेंदु हरिष्चंद्र ने नारी के बदले रुप की तस्वीर को उभारा है । बिसवी सदी के आरंभ में गांधीजी ने आवाज उठाया । महिला रचनाकारों ने इसे अनदेखा नही किया । प्रेमचन्द ने नारी शोषण का विरोध किया । जैनेन्द्र कुमार ने परंपरागत नारी की मुर्ति का भंजन किया । घर - परिवार पति के बंधनों से मुक्त करने प्रोत्साहित किया । माँ-पत्नी, पुत्री से हटकर नारी का अस्तित्व क्या हो, इस पर विचार किया ।

१९४७ के बाद नारी घर से निकली । स्कूल, कालेज, बाजार, दफ्तर गई । सामाजिक स्थिति बदलली पर नई समस्यायें आयी । घर-बाहर दोनों जगह पर पुरुष वर्चस्व के खिलाफ खड़ी हुई । संघर्ष और साहस से बदले परिवेष को स्थापित किया । पूराने मुल्यों, जंजीर, रुढियों, आधुनिक सभ्यता के

तथा कथित अधिकारों मे बदलते संदर्भ में नारी की स्थिति उभारी । उनमे कमलेश्वर, राजेन्द्र, मन्नुभंडारी, प्रभाखेतान, उषा प्रियवन्दा, मैत्रेयी पुष्पा को हम महत्व दे सकते है । राजेन्द्र यादव ने संयुक्त परिवार कुवलना चाहता है । पर संभव नही है । अब वह माँ तक की पत्नीत्व की अपेक्षा करती है । मन्नुजी कहती है - "आज की मै इतनी निर्वल और निरीह नही कि मुझे जीवन बिताने के लिए कोई सहारा चाहिए । " इस युग में वह अपनी ताकत पहचान रही है । विवाह संस्था की मोहताज नहीं रह जाती । कामकाजी महिला घर का दायित्व लेकर भरण पोषण करती है । पर वह जो चाहती है, वह भी करने को इच्छुक है ।

कमलेश्वर जी ने नगरीय परिवेष पर लिखी नारी की विद्रूप, विसंगतियों और समस्याओं पर प्रकाष डाला है । 'काली आंधी' कहानी में पत्नी राजनेता बनकर पति और संतान का साथ नही निभा पाती । 'तलाष' कहानी भी विधवा, कामकाजी को चित्रित करती है । पर मानसिकता और शारीरिक स्वतंत्रता में अपनी पुत्री बाधक बनती है । अंदर घुट रही है, लाचारीवष व्यक्त नही कर पाती । नैतिकता उसके कदम रोक लेती है । कमलेष्वर और उषा प्रियवंदा ने नारी की आर्थिक आत्मनिर्भर, व्यक्तित्व के टकराव की समस्या वाली नारीयों को अपनी कहानियों में चित्रित किया है । आगे चलकर हम देखते है की प्रभाखेतान की कहानियों में विद्रोह और तीव्र है । रुढिया तोड आत्मनिर्भर सफल कार्यषील महिला का चित्रण है । ग्रामीण परिवेष में सामाजिक जागरण का दायित्व लेती है । समय - समय के अनुरुप कहानीकारों ने अपने कहानी के कथ्य को परिवर्तित किया है । आजादी के बाद नारी को पारीवारिक दायरे से बाहर निकालकर सामाजिक सरोकार और जीवन के यथार्थ से जोड़ा है । इसमे अपने सजग और सफक्त नेतृत्व में स्त्री संसार की जटिलताओं में व्यक्त करनेवाली लेखिकाएँ आती है । कृष्णा सोबती, उषा प्रियवंदा, मन्नु भंडारी, पिवानी, ममता, कालिया ।

जटिलताओं के साथ आगे चलकर आधुनिक नारी की मनस्थिति, पारिवारीक जीवन और दांपत्य-जीवन को लेकर भी लेखन कार्य हुआ । इनमें वन्द्रिका सोनरेक्सा, मालती जोषी, प्रतिभा वर्मा, सुधा अरोडा, मृदुला गर्ग प्रमुख है । इन्होने समाज और युग के सत्य को पहचान कर भारतीय समाज के मध्यमवर्ग की स्त्रियों का परिवारीक समाज जीवनायुक्त लेकर चलने का कार्य किया है । इन्होने अपनी भाषा शैली और संवेदना से सूक्ष्म स्तरों पर भारतीय नारीयों को चित्रित किया है । तो उत्पीडित नारी जीवन की अनुभूतियों को व्यक्त करनेवाली लेखिकाएँ - मेहरुन्निसा परवेज, नासिरा शर्मा है । इन्होने काफी अविस्मरणीय कहानियाँ लिखी है । नारीमन, जीवन मुल्यों, परंपरा और आधुनिकता के टकराव, नारीमन की घनीभु पीड़ा संबंधों में दरार आदि विषयों को रुपाकार देने में सुर्यबाला, चित्रमुदगल, चंद्रकांता का नाम सर्वोपरी लिया जाता है । यहाँ पर नारी मुक्ति ही नही, देष और समाज की अन्य अनेकों समस्याएँ भी है । मृपाल पांडेय, अलका सरावगी, कुसुम असंल ने परिवर्तित जीवन स्वरुप को सही रुप से अभिव्यक्त किया है । कथाओं का लेखन विविध प्रकार से यहाँ दिखाई देता है । नारी का अपना वृतांत विष्वासनीय ढंग से यहाँ चित्रित हुआ है । इसीलिए इसे नारी की अपनी निजी प्रासंगिकता का प्रष्न भी उत्तरित हुआ है । वह यथार्थ को मजबूती से व्यक्त कर सकती है । व्यंग्यकी पैनी धार में कोई संकोच नही रखती । वैसे हम देखते है की कई पीढ़िया एक साथ लिख रही है । किन्तु पिछले दषक में शामिल हुई कथाकारों में महुआ माझी काफीचर्चित हुई । इन्होने आदिवासी और मुस्लिम महिला चरित्रोंके अंतर्मन को गहराई से खोला है । नारी मन की कोमल संवेदना (फत्यनपा-कालिदास) बडी संजीदगी से अंकित करती है । देह की नाटकता से बंधी है । परंतु हलकी भावुकता से बचकर लिखने में सफल हो रही है । अपने व्यापक अनुभव और गहन सृजन धर्मिता के बल पर नई पीढी ने इस क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है । अल्पनामिश्र का कहना है की यहाँ यह महानगर तक सीमित न होकर आदिवासी और ग्रामीण परिवेष में नारी का रुप चित्रित हो रहा है । यहाँ आनेवाला राष्ट्रीय परिदृष्य भी अछुता नही रहेगा । अपने अनुभव के बलबुतेपर नई पीढी ने बहुत जल्द ही इस क्षेत्र को स्वीकारा है । युवा पीढी की लेखिकाओं ने अपने सृजनयात्री और संघर्षषील लेखन के आधारपर हिन्दी को समृध्द बनाने का सक्षम कार्य किया है ।

स्त्री का आजादी का प्रष्न हमारी बहसों का विषय है । यत्र नार्यस्तु पूज्यतें रमतें तत्र देवता के खयालों में स्त्री को ऊंचा उठाया है । उसे मानवीय बनने नही दिया । उसे पुज्यनीय भाव से सराहा गया है । मंदिरों की सीढियाँ मात्र चढाई गई । कोरी आदर्षवादी चिंतनधारा ने ही उसे अधिक रुढिवादी बनाने का काम किया है । हमें स्त्री विमर्ष हिन्दी साहित्य में पहलीबार मध्यकालीन कवयित्री मीराबाई के काव्य और व्यक्तित्वमें उभरता दिखाई देता है । विद्रोहिणी प्रतिभा से उन्होने नारी अस्मिता को एक अभूतपुर्व नींव रचने का कार्य किया है । "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न काई । " इस पद से तत्कालीन रुढियों मे जकडे राज समाज में कितने ज्वालामुखी न फट पडे होंगे । मीरा के कई वर्ष के बाद यह स्त्री-चेतना की लहर हमें वी सदी में तक सीर उठाती नजर आती है । यह पुनर्जागरण की लहर हमे राजाराम मोहन राय और पंड विद्यासागर के स्त्री-मुक्ति प्रयासों में नजर आती है । स्वाधिनता के पहले १८७७ में इसका प्रभाव हमे महारानी लक्ष्मीबाई के विद्रोह में परिलक्षित होता है । साहित्य जगत में भारतेंदु हरिश्चंद्र और उनकी मंडली के कई रचनाकारों ने नारी की दयनीय स्थिति पर रचनाओं की निर्मिती की है । हिन्दी के महिला रचनाकारों

ने घर-परिवार समाज और देष सभी को अपनी दृष्टि के केंद्र में रखा है । इन्होंने कभी भी अपने कृतित्व को घोषित रख नारी विमर्ष की संज्ञा नही दी । हमे अस्सी के पहले कुछ वार स्त्री विमर्ष - दलित विमर्ष की अनुगुंज सुनने को मिलती थी । उदाहरण के लिए हम बोधिसत्व की कविता को देख सकते है ।

' नारी'
ननी विचारी,
पुरुष की मारी,
तव से सुधित,
मन से मुदित
ललककर झपककर
अंत में वित्त ' । "

बोधिसत्व की कविता में औरत की रची-बसी जिन्दगी की अंदरुनी स्थितियों की सुक्ष्म दृष्टि दिखाई देती है । शकुंत माथुर की कविता ' जी लेने दो ' जिसमें नारी की अस्मिता की तलाष पहचानी गई है ।

" जी लेने दो / मुझे / वह कोरा अर्थ /
मेरे लिए अपना है ।
रख लेने दो मुझे
वही मेरे पास
जो नितान्त मेरा अपना है ।
पी लेने दो वह
वह चाह
वह रस
जो मेरे लिए अच्छा है ।
संचित कर लेने दो वह
जो
घुम रहा नस-नस में
हर धडकन में जीवन
जीसको जीकर मै जान सकूं
मैने भी कुछ
अपनी तरह जिया है । "

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

सारत

स्त्री हर क्षेत्र में अपने आपको सक्षम सिध्द करने का प्रयास कर रही है । उसकी शैक्षणिक प्रगति, परिवार एवं समाज का उसकी ओर देखने का दृष्टिकोण में भी बदलाव आया है । स्त्री की स्वतंत्रता और उसका सबलीकरण का प्रमुख आधार अर्थ है । वह आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी हो रही है । राजनीति के क्षेत्र में उसका पदार्पण भले ही मंद गति से हो रहा हो । वह शीघ्र ही इस क्षेत्र में आधिकाधिक संख्या में सिध्द होगी । वर्तमान स्त्री धार्मिक, आडम्वरों, पाखंडो, अंधविष्वासो से उबरकर अपनी जड़वत स्थितियों को त्याग रही है ।

संदर्भ ग्रंथ

१.स्त्रीत्ववादी विमर्ष समाज और साहित्य - नमा शर्मा
२.महिलाओं का संसार और अधिकार - वंदना सक्सेना
३.उत्तर ष्षती के हिंदी उपन्यास - एन. मोहन
४.औरत : उत्तर कथा - राजेन्द्र यादव एवं अर्चना वर्मा
५.स्त्री संघर्ष का इतिहास - राधाकुमार

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

Chief Editor
Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102
Email- rbhole1965@gmail.com
Visit-www.jrdrvb.com

Address
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot, No-23,
Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102